Keynes की उपभोग प्रवृत्ति नियम निम्न मान्यताओं पर आधारित है —

(1) अर्थव्यवस्था में सदा साधारण अवस्था बनी रहनी चाहिए अर्थात युद्ध, क्रांति अथवा तिफति जैसी असाधारण अवस्था नही होनी चाहिए।

(2) उपभोग प्रवृत्ति स्थिर रहती है क्योंकि लोगों की उपभोग व्यय से सम्बद्ध आदतें स्थिर रहती है।

(3) बाजार में Laissez faire की नीति लागू हो रही हो।

अगर उपरोक्त मान्यताएँ अर्थव्यवस्था में लागू हो रही है तो उपभोग प्रवृत्ति के Keynes ने निम्न तथ्य स्थापित किये है —

(a) उपभोग व्यय में वृद्धि उसी अनुपात में नही होगा जिस अनुपात में आय में वृद्धि होती है।

(b) अतिरिक्त आय का एक भाग उपभोग पर व्यतित होगा और शेष बचत के रूप में रखा जाएगा।

(c) आय में वृद्धि के साथ उपभोग और बचत दोनों में वृद्धि होती है।

Factors affecting Consumption Function :—

उपभोग प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले तत्वों को दो भागों में बाँटा जा सकता है —

Subjective Factors :— उपभोग प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले आत्मगत तत्वों में वे मनोवैज्ञानिक प्रयोजन आते है जिनके कारण या तो मनुष्य अधिक उपभोग व्यय करता है अथवा अपव्यय से बचता है। वे मनोवैज्ञानिक तत्व जिनसे वह अधिक बचत करता है वे तत्व मुख्यतः परिवार स्नेह, वृद्धावस्था, सुरक्षा, दूरदर्शिता आदि है। व्यापारी भी अपने लाभों का एक अंश अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने तथा आकस्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बचा कर रखते है। Keynes के अनुसार इन मनोवैज्ञानिक तत्वों में अल्पकाल में परिवर्तन संभव नही होता अतः उपभोग कार्य प्रायः स्थिर रहता है। Subjective factors उन मनोवैज्ञानिक विशेषताएं तथा संस्थागत परम्पराओं पर निर्भर है जिनमें

परिवर्तन आसान नही है। इसलिए इन Subjective factors के प्रभाव के कारण उपभोग फलन प्रायः समान या स्थिर रहता है।

Objective factors :—

Keyns ने six objective factors को दिया जिनपर उपभोग प्रवृति निर्भर करती है :—

(1) Wage and Price Level— कीमत स्तर के बढ़ने के कारण वास्तविक आय में कमी हो जाती है जिससे उपभोग प्रवृति भी घट जाती है। इसके विपरीत कीमत स्तर के कमी वास्तविक आय के वृद्धि लाकर उपभोग प्रवृति को बढ़ाती है। इसीप्रकार मजदूरी में वृद्धि से उपभोग प्रवृति में वृद्धि तथा कमी से उपभोग प्रवृति में कमी आयेगी।

(2) Depreciation घिसावट — घिसावट के कारण भी उपभोग में वृद्धि होती है। पुरानी मशीनों की जगह नई मशीने स्थापित करनी पड़ती है।

(3) Windfall Gains or Losses (आकस्मात लाभ या हानि) आकस्मात लाभ या हानि से भी उपभोग प्रवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है। 1920 ई॰ के बाद अमेरिका की आर्थिक व्यवस्था में लोगों को आकस्मात लाभ हुआ जिससे उपभोग में वृद्धि हुई।

(4) Changes in Fiscal Policy (राजकोषिय नीति में परिव[illegible] राजकोषिय नीति के अन्तर्गत कर, सार्वजनिक व्यय त[illegible] ऋण आते है जिसका प्रभाव उपभोग प्रवृति पर पड़ता [illegible] सरकार अपनी राजकोषीय नीति द्वारा प्रगतिशील कर [illegible] प्रणाली अपनाकर धन के समान वितरण में सहाय[illegible] देती है जिससे उपभोग को प्रोत्साहन मिलता है।

(5) Changes in Expectation (आशाओं में परिव[illegible] भविष्य में होने वाली घटनाओं के प्रति आशाओं [illegible] भी उपभोग प्रवृति प्रभावित होती है। अगर किसी

युद्ध या अन्य प्रकार के संकट की सम्भावना हो तो लोग अधिक वस्तुएं क्रय करेगा और इसके उपभोग प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलेगा। ऐसा कोरियन युद्ध (Korian War) के समय में पाया गया।

(6) Substantial Changes in the Rate of Interest (अकस्मात ब्याज दरों में परिवर्तन) - Value of bonds and mortgages में अत्यधिक वृद्धि या ह्रास होने से ब्याजदर में परिवर्तन हो जाता है जिसके फलस्वरूप बचत में परिवर्तन होता है तथा उपभोग में भी परिवर्तन होता है।

इसप्रकार Keynes के अनुसार Objective factors में परिवर्तन होने से ही उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन होता है। Subjective factors के द्वारा Form or slope and Normal position उपभोग प्रवृत्ति का प्राप्त होता है।

उपभोग प्रवृत्ति नियम से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि जैसे जैसे आय बढ़ेगी आय एवं उपभोग के बीच की दूरी बढ़ती चली जायेगी जिसके फलस्वरूप बेरोजगारी की स्थिति बन जायेगी। इसके लिए आवश्यक है कि इस उपभोग एवं आय के Gap को विनियोग के द्वारा पाटा जाय।

By -

Dr Sandhya Rani
Maharaja College